मासिक समाचार पत्र

परिसर

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय,मेरठ

फरवरी–मार्च 2026

विश्वविद्यालय में 13 से 25 मार्च तक चलाए गए सर्वाइकल कैंसर टीकाकरण अभियान के शुभारंभ पर टीका लगवाने वाली बालिका के साथ कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला। *(संबंधित खबर पेज 3 पर)*

वेबोमेट्रिक्स रैंकिंग में राज्य विश्वविद्यालयों में सीसीएसयू द्वितीय

परिसर संवाददाता

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय (सीसीएसयू) ने वेबोमेट्रिक्स आफ वर्ल्ड यूनिवर्सिटीज की जनवरी–2026 की रैंकिंग में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। सीसीएसयू को प्रदेश के राज्य विश्वविद्यालयों में दूसरा स्थान प्राप्त हुआ है। देश में इसे 136 वीं, महाद्वीप में 1,187वीं और विश्व स्तर पर 2,972 वीं रैंक मिली है।

विश्वविद्यालय के रिसर्च डायरेक्टर प्रोफेसर बीरपाल सिंह के अनुसार, वेबोमेट्रिक्स एक अंतरराष्ट्रीय रैंकिंग प्रणाली है, जिसे

स्पेन की प्रतिष्ठित शोध संस्था साइबरमेट्रिक्स लैब द्वारा प्रकाशित किया जाता है। यह रैंकिंग विश्वविद्यालयों की डिजिटल उपस्थिति, शोध प्रभाव और आनलाइन पहुंच का मूल्यांकन करती है, जो इसे पारंपरिक रैंकिंग से अलग बनाती है।

इस रैंकिंग का आधार विश्वविद्यालय की वेबसाइट की बाहरी लाइकिंग, वैश्विक डिजिटल पहचान व प्रतिष्ठा, गूगल स्कालर आधारित शोधकर्ताओं के साइटेशन व शोध कार्यों की विश्वसनीयता और उच्च गुणवत्ता वाले अंतरराष्ट्रीय शोध प्रकाशन, सिमैगो व स्कोपस डाटा आधारित मूल्यांकन है।

पवन कुमार को सर्वश्रेष्ठ मौखिक प्रस्तुति पुरस्कार

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय कैंपस में भौतिक विज्ञान विभाग के शोधार्थी पवन कुमार ने नागोया विवि जापान एवं एसएसएन कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग चेन्नई के तत्वावधान में चेन्नई में हुई सिम्पोजियम में सर्वश्रेष्ठ मौखिक प्रस्तुति पुरस्कार जीता।

पवन कुमार को 'मॉडलिंग ऑफ क्रिस्टल ग्रोथ प्रोसेस एंड डिवाइसेस और थर्ड इंडो–जापान वर्कशॉप ऑन मशीन लर्निंग फॉर क्रिस्टल ग्रोथ' में यह पुरस्कार दिया गया। पवन कुमार ने पर्यावरणीय सुरक्षा, औद्योगिक गैस रिसाव की निगरानी एवं ज्वलनशील हाइड्रोजन गैस की कम सांद्रता पर त्वरित पहचान सहित वैश्विक चुनौतियों पर केंद्रित शोध पत्र प्रस्तुत किया। पवन कुमार ने अपना शोध कार्य उनके मार्गदर्शक प्रो. अनुज कुमार के निर्देशन में पूरा हुआ। उन्होंने कहा कि यह उपलब्धि टीमवर्क, समर्पण और वैज्ञानिक अनुशासन का परिणाम है।

सीसीएसयू और उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय मिलकर आगे बढ़ेंगे

नवाचार, शोध और शैक्षणिक गतिविधि का कर सकेंगे आदान–प्रदान

परिसर संवाददाता

मेरठ। उच्च शिक्षा एवं शोध को नई दिशा देने के उद्देश्य से चौ. चरण सिंह विवि और उत्तराखंड मुक्त विवि हल्द्वानी ने सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर किए। एमओयू में दोनों विवि के बीच शोध, शैक्षणिक गतिविधि, संयुक्त परियोजना एवं ज्ञान–संसाधनों के आदान–प्रदान के क्षेत्र में मिलकर काम करने की सहमति बनी।

उत्तराखंड मुक्त विवि दूरस्थ माध्यम से विभिन्न डिग्री, डिप्लोमा व सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम संचालित करता है। उत्तराखंड मुक्त विवि के कुलपति प्रो. नवीन चंद लोहानी ने कहा कि दोनों विवि के बीच हुआ यह एमओयू शिक्षा एवं शोध क्षेत्र में नए अवसर प्रदान करेगा।

सीसीएसयू कुलपति प्रो. संगीता

समझौते पर हस्ताक्षर करते उत्तराखंड ओपन यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रोफेसर नवीन चंद्र लोहानी और सीसीएसयू की कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला।

शुक्ला ने कहा यह एमओयू शोध और अकादमिक गतिविधियों को नई गति देगा। सीसीएसयू से शोध निदेशक प्रो. बीरपाल सिंह, रजिस्ट्रार डॉ. अनिल यादव, प्रो. मृदुल गुप्ता, प्रो. हरे कृष्णा, प्रो. राकेश शर्मा, प्रो. जितेंद्र सिंह, प्रो. प्रदीप चौधरी, डॉ. सचिन कुमार जबकि उत्तराखंड मुक्त विवि से रजिस्ट्रार खेमराज भट्ट, प्रो. जितेंद्र पांडेय, प्रो. गगन सिंह, त्रिलोक सिंह मौजूद रहे।

सीसीएसयू के छात्र एक सेमेस्टर वियतनाम में पढ़ेंगे

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय कैंपस के चयनित विद्यार्थी एक सेमेस्टर की पढ़ाई वियतनाम में करेंगे। सत्र 2026–27 से इसकी शुरुआत होने जा रही है। विवि से ये छात्र वियतनाम स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ इकोनॉमिक्स एंड फाइनेंस एवं ह्यूटेक यूनिवर्सिटी और हो ची मिन्ह सिटी में एक सेमेस्टर की पढ़ाई के साथ–साथ शोध परियोजना एवं शोध प्रबंध के लिए पहुंचेंगे।

वियतनाम से इन दोनों विवि के छात्र और शिक्षक भी सीसीएसयू आएंगे। वियतनाम से सीसीएसयू पहुंचे प्रो. माजो जार्ज के साथ कुलपति प्रो. संगीता शुक्ला की अध्यक्षता में हुई बैठक में यह निर्णय हुआ।

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के अनुसार कैंपस से विभिन्न संकायों के स्नातक, स्नातकोत्तर एवं शोधार्थी वियतनाम के उक्त दोनों विवि में सेमेस्टर अध्ययन के लिए जा सकेंगे।

मालिनी अवस्थी और शैलेंद्र जायसवाल प्रोफेसर आफ प्रैक्टिस नियुक्त

परिसर संवाददाता

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय में कुलपति प्रो. संगीता शुक्ला की अध्यक्षता में हुई कार्यपरिषद की बैठक में कई महत्वपूर्ण मामलों को स्वीकृति प्रदान की गई। बैठक में विभिन्न प्रशासनिक एवं शैक्षणिक विषयों पर विचार–विमर्श करते हुए महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। प्रसिद्ध लोक गायिका मालिनी अवस्थी एवं पूर्व कार्यपरिषद सदस्य शैलेंद्र एन. जायसवाल को एक वर्ष की अवधि के लिए प्रोफेसर आफ प्रैक्टिस पद पर नियुक्त किया गया।

मालिनी अवस्थी के जुड़ने से विश्वविद्यालय को कई प्रमुख लाभ होंगे। इससे लोक संस्कृति एवं क्षेत्रीय भषाओं के संरक्षण और संवर्धन को बढ़ावा मिलेगा। विद्यार्थियों को मंचीय अनुभव एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण का अवसर, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक्सपोजर में वृद्धि, सांस्कृतिक

छात्र–छात्राओं को नई दिशा एवं व्यापक अवसर मिलेंगे

कुलपति प्रो. संगीता शुक्ला ने कहा कि यह नियुक्ति विश्वविद्यालय को नवाचार एवं उद्यमिता के क्षेत्र में अग्रणी बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि इससे छात्र–छात्राओं को नई दिशा एवं व्यापक अवसर प्राप्त होंगे। यह पहल राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के उद्देश्यों के अनुरूप है, जिसमे कौशल आधारित शिक्षा, नवाचार एवं उद्यमिता को विशेष महत्व दिया गया है।

गतिविधियों, कार्यशालाओं एवं प्रशिक्षण शिविर का विस्तार और प्रदर्शन कला के क्षेत्र में रोजगारोन्मुखी मार्गदर्शन मिलेगा।

शैलेंद्र एन. जायसवाल पूर्व में विश्वविद्यालय की कार्यकारी परिष्द के सदस्य रह चुके हैं, जिससे उन्हें विश्वविद्यालय की शैक्षणिक एवं प्रशासनिक संरचना का गहन अनुभव प्राप्त है। उनका विभिन्न प्रतिष्ठित संस्थानों एवं संगठनों में दीर्घ अनुभव रहा है तथा वर्तनान में वे सृजन संसार के साथ लीड मेंटर के रूप में जुड़े हुए हैं। वे नवाचार रणनीतिकार, तकनीकी विशेषज्ञ तथा अकदमिक प्रैक्टिशनर हैं। उनके पास सरकार, शिक्षा जगत, उद्योग एवं उद्यमिता इकोसिस्टम में 35 से अधिक वर्षों का नेतृत्व अनुभव है।

उनके मार्गदर्शन में विश्वविद्यालय में स्टार्टअप, नवाचार एवं इनक्यूबेशन गतिविधियों को नई गति मिलने की संभावना है। उनके अनुभव से विद्यार्थियों को व्यावहारिक ज्ञान, उद्योग आधारित प्रशिक्षण एवं रोजगारोन्मुख कौशल प्राप्त होंगे।

क्या होता है प्रोफेसर आफ प्रैक्टिस

प्रोफेसर आफ प्रैक्टिस वे अनुभवी पेशेवर

होते हैं, जिन्हें विश्वविद्यालय या संस्थानों में पढ़ाने के लिए नियुक्त किया जाता है।

उनका मुख्य उद्देश्य छात्रों को अपने क्षेत्र में व्यावहारिक अनुभव और ज्ञान प्रदान करना होता है। ये प्रोफेसर अपने क्षेत्र में विशेषज्ञ होते हैं। साथ ही छात्रों को वास्तविक दुनिया के अनुभव भी साझा करते हैं।

56 ने पास की योग्यता परीक्षा : अटल सभागार में प्लेसमेंट प्रकोष्ठ और टाइम्स प्रो ने प्लेसमेंट ड्राइव आयोजित की। 350 छात्रों ने पंजीकरण कराया, 56 ने योग्यता परीक्षा पास की। ये छात्र अब ऑनलाइन साक्षात्कार देंगे। चयनितों को करीब 4 लाख रुपये सालाना पैकेज मिलेगा। कार्यक्रम के समन्वयक प्रो. शैलेंद्र सिंह गौरव रहे।

रानी लक्ष्मीबाई छात्रावास : आवास संग व्यक्तित्व विकास की भी सुविधा

कीर्ति सैनी

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के हरे–भरे 222 एकड़ परिसर में स्थित रानी लक्ष्मीबाई गर्ल्स हॉस्टल छात्राओं के लिए एक आदर्श आवासीय सुविधा है। यह हॉस्टल भारत की वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई के नाम पर है, जो साहस, नेतृत्व और महिलाओं की शक्ति का प्रतीक हैं। यहां रहने वाली छात्राएं न केवल सुरक्षित और आरामदायक वातावरण में पढ़ाई करती हैं, बल्कि विभिन्न गतिविधियों में भाग लेकर अपनी बहुमुखी प्रतिभा को भी निखारती हैं। विश्वविद्यालय के दो गर्ल्स हॉस्टल (दूसरा दुर्गा भाभी गर्ल्स हॉस्टल) में से एक होने के नाते यह छात्राओं को उच्च शिक्षा और समग्र विकास के अवसर प्रदान करता है।

हॉस्टल की स्थापना और इतिहास

रानी लक्ष्मीबाई गर्ल्स हॉस्टल की स्थापना 2005 में हुई थी। हॉस्टल का मुख्य उद्देश्य छात्राओं को सुरक्षित और प्रेरणादायक माहौल प्रदान करना रहा है, ताकि वे अपनी पढ़ाई, खेलकूद, सांस्कृतिक और अन्य गतिविधियों पर फोकस कर सकें।

वर्षों में यह छात्राओं के बीच बहुत लोकप्रिय हो गया है। यहां विभिन्न विभागों से स्नातक, स्नातकोत्तर और शोधरत छात्राएं रहती हैं। हॉस्टल ने छात्राओं के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

सुविधाएं और क्षमता

हॉस्टल में कुल 105 कमरे हैं, जो छात्राओं को पर्याप्त स्थान प्रदान करते हैं। प्रत्येक कमरे में बिस्तर, अध्ययन टेबल, कुर्सी और अलमारी जैसे आवश्यक फर्नीचर उपलब्ध हैं। सीट आवंटन विश्वविद्यालय के नियमों और एससी,एसटी, ओबीसी आरक्षण नीति के अनुसार किया जाता है।

नियमित खेलकूद

विश्वविद्यालय में नियमित इंटर–हॉस्टल प्रतियोगिताएं होती हैं, जिनमें खेल, सांस्कृतिक नाटक, कबड्डी, क्रिकेट, स्किट आदि शामिल हैं। रानी लक्ष्मीबाई गर्ल्स हॉस्टल की छात्राओं ने इनमें लगातार शानदार प्रदर्शन किया है।

2024–25 सत्र में स्किट ड्रामा प्रतियोगिता में 'द गॉसिप चेन' प्रस्तुति से दूसरा स्थान प्राप्त किया। कबड्डी और अन्य खेलों में टीमों ने मजबूत प्रदर्शन किया। ये आयोजन छात्राओं में टीम वर्क, नेतृत्व और आत्मविश्वास विकसित करते हैं।

रानी लक्ष्मीबाई गर्ल्स हॉस्टल छात्राओं को घर जैसा माहौल देता है। परिसर के निकट होने से सुविधाओं तक आसान पहुंच है। इंटर–हॉस्टल प्रतियोगिताओं में अच्छा प्रदर्शन आत्मविश्वास बढ़ाता है।

विश्वविद्यालय की A++ NAAC ग्रेडिंग के साथ यह हॉस्टल छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य की मजबूत नींव है।

बीकॉम प्रथम वर्ष की छात्रा रेणुका कहती हैं, "यह हॉस्टल मेरे लिए घर जैसा है। जिम और अध्ययन कक्ष बहुत उपयोगी हैं। वार्डन मैम हमेशा सहयोग करती हैं। इंटर–हॉस्टल प्रतियोगिताओं में भाग लेकर मुझे बहुत आत्मविश्वास मिला। यहां रहकर पढ़ाई और व्यक्तिगत विकास दोनों संभव हो पाते हैं।"

बीएजेएमसी प्रथम वर्ष की छात्रा इशिता का कहना है, "सुरक्षा व्यवस्था शानदार है, सीसीटीवी और महिला गार्ड्स से हम सुरक्षित महसूस करती हैं। मेस का भोजन पौष्टिक और स्वादिष्ट है। वाई–फाई से ऑनलाइन पढ़ाई आसान हो जाती है। यहां की हरियाली और शांत वातावरण पढ़ाई के लिए आदर्श है।"

बीए एलएलबी प्रथम वर्ष की छात्रा राधिका की राय में, "इंटर–हॉस्टल इवेंट्स में भाग लेना बहुत मजेदार रहा। हमारी टीम ने अच्छा प्रदर्शन किया, जिससे दोस्ती बढ़ी और कौशल निखरा। राधिका की राय में वार्डन प्रो. बिंदु शर्मा मैम छात्राओं के सुझाव सुनती हैं और सुधार करती हैं। यह हॉस्टल न केवल आवास देता है, बल्कि हमें सशक्त बनाता है।"

एमए प्रथम वर्ष में पढ़ने वाली भावना का कहना है कि "हॉस्टल की सुविधाएं विश्वविद्यालय स्तर की हैं। योगा और खेल से स्वास्थ्य बेहतर हुआ। यहां रहकर समय की बचत होती है और ला. इब्रेरी, क्लास में आसानी से पहुंच सकती हूं। सांस्कृतिक कार्यक्रमों से सकारात्मक ऊर्जा मिलती है।"

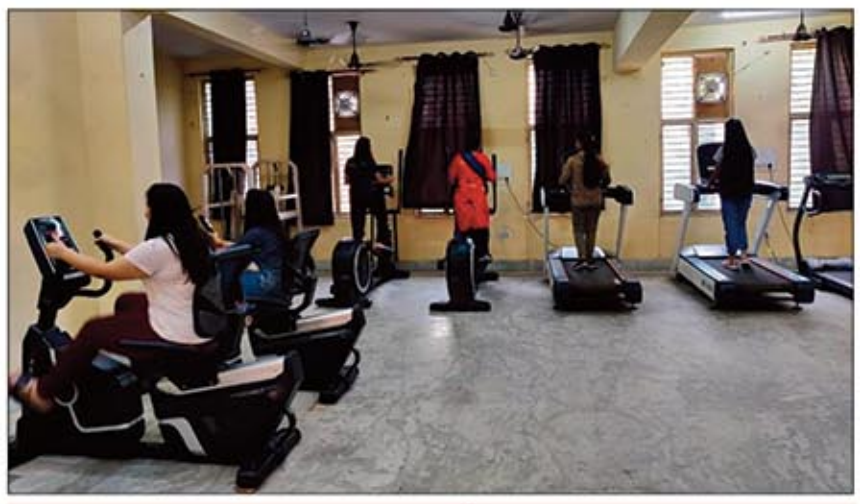

प्रमुख सुविधाएं

- **सुरक्षा व्यवस्था :** सातों दिन, चौबीस घंटे महिला सुरक्षा गार्ड्स और सीसीटीवी कैमरों से निरंतर निगरानी।
- **जिम और फिटनेस :** आधुनिक कॉमन जिम, जहां छात्राएं किसी भी समय व्यायाम कर सकती हैं। यह 'मिशन शक्ति' के तहत फिटनेस को बढ़ावा देता है।
- **अध्ययन और सामान्य कक्षः** शांत अध्ययन कक्ष और सामान्य कक्ष में टीवी, बैठने की व्यवस्था।
- **स्वास्थ्य सेवाएं :** नियमित जांच और विश्वविद्यालय स्वास्थ्य केंद्र से जुड़ाव।
- **अन्य सुविधाएं :** आरओ पानी, वॉटर हीटर, पावर बैकअप, वाई–फाई, स्वच्छ मेस (पौष्टिक भोजन), इंडोर,आउटडोर खेल (बैडमिंटन, टेबल टेनिस, योगा), सफाई पर विशेष ध्यान।

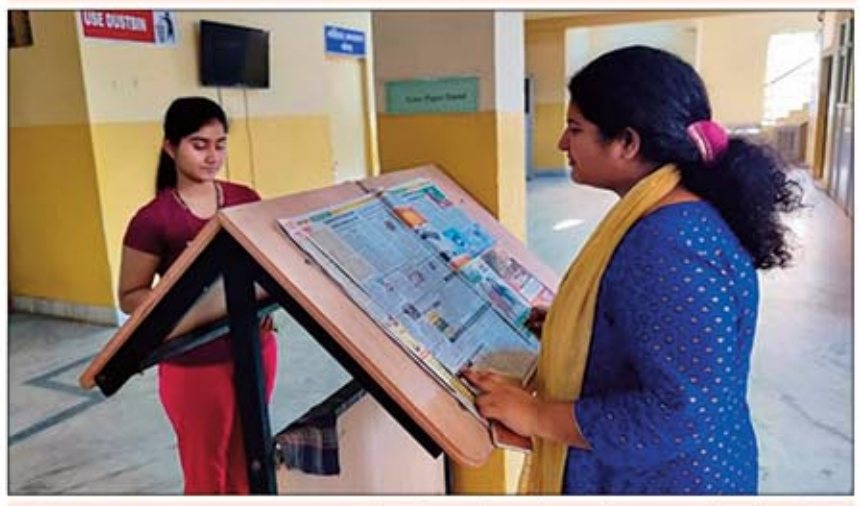

हॉस्टल का संचालन मुख्य वार्डन के अधीन है। वर्तमान वार्डन प्रो. बिंदु शर्मा छात्राओं की समस्याओं का समाधान करती हैं और गतिविधियों का प्रबंधन करती हैं। उनके नेतृत्व में शिक्षक दिवस, स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस आदि आयोजन होते हैं।

महाराणा प्रताप छात्रावास : कम खर्च में पढ़ने, रहने की बेहतरीन सुविधा

हमारा मुख्य उद्देश्य छात्रों को सुरक्षित, अनुशासित और पढ़ाई के अनुकूल वातावरण देना है। यहाँ सीनियर छात्रों की उपस्थिति से जूनियर छात्रों को मार्गदर्शन और सहयोग मिलता है, जिससे उनका शैक्षणिक विकास बेहतर होता है। हम यह सुनिश्चित करते हैं कि हर छात्र को शांतिपूर्ण माहौल मिले ताकि वह अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित कर सके और आगे बढ़े। *–डॉ. यशवेंद्र वर्मा (हॉस्टल वार्डन)*

प्रियांशु चौधरी

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय में छात्र–छात्राओं के लिए बने नौ छात्रावासों में से एक महाराणा प्रताप हॉस्टल का स्थान विशेष है। 2006 में बने इस छात्रावास की बिल्डिंग अपेक्षाकृत नई और व्यवस्थित है। इसके कमरे, बाथरूम और गलियारे अन्य छात्रावासों की तुलना में बेहतर हैं।

120 कमरे वाले महाराणा प्रताप हॉस्टल में छात्रों के रहने के लिए पर्याप्त जगह है। यहां अलग–अलग जिलों और कोर्स के लगभग 204 छात्र रहते हैं, जिनमें द्वितीय वर्ष और उससे ऊपर की कक्षाओं के छात्र हैं।

महाराणा प्रताप छात्रावास में छात्रों को कई प्रकार की सुविधाएं प्राप्त हैं। यहां से छात्रों की कक्षाएं, लाइब्रेरी और विभाग भी पास में ही हैं। यहां वाई–फाई की भी सुविधा उपलब्ध है। छात्रावास में रीडिंग रूम, बिजली, पानी, 24 घंटे पावर बैकअप, आरओ वाटर कूलर, गरम पानी की भी सुविधा है। इसके साथ ही टेबल टेनिस, कैरम और शतरंज जैसे इंडोर गेम्स की भी सुविधा है। विश्वविद्यालय का स्पोर्ट्स कॉम्पलैक्स भी पास में ही है।

छात्रों के अनुसार छात्रावास में रहना बाहर के पीजी या कमरा लेकर रहने से काफी सस्ता और सुविधाजनक पड़ता है। महाराणा प्रताप छात्रावास की वार्षिक फीस 35 हजार रुपये है। साथ में मेस का खर्च अलग से है।

इस प्रकार छात्रावास में कम खर्च में पढ़ाई और प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने की बहुत ही अच्छी सुविधा मिल जाती है। साथ ही अलग–अलग जिलों से आए छात्र जब आपस में मिलते हैं तो एक–दूसरे से बहुत कुछ सीखने को भी मिलता है।

संरक्षक : प्रोफेसर संगीता शुक्ला (कुलपति), **मुख्य संपादक** : डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव, **संपादक** : लव कुमार सिंह, **संपादकीय सलाहकार** : डॉ. दीपिका वर्मा, डॉ. बीनम यादव, **संपादकीय टीम** : बीएजेएमसी और एमएजेएमसी के छात्र–छात्राएं।

शहीदों को श्रद्धांजलि : शहीद दिवस के अवसर पर 23 मार्च को विश्वविद्यालय के प्रवेश द्वार पर स्थित शहीद की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार डॉ. अनिल कुमार यादव। 23 मार्च 1931 को स्वतंत्रता सेनानी भगत सिंह, सुखदेव थापर और शिवराम राजगुरु देश की आजादी के लिए फांसी पर चढ़ गए थे।

रात में रोशन होगा पूरा कैंपस, छह लाख लीटर पानी बचाएगा

परिसर संवाददाता

मेरठ। 222 एकड़ में फैला चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय कैंपस अब रात में रोशन होगा। पूरे क्षेत्र को रोशनी से कवर करने को कैंपस में 40 से 80 फुट ऊंची आठ हाई मास्ट लाइट लगने जा रही हैं। इसमें से तीन लाइट 80 फुट ऊंची होंगी जबकि पांच 40 फुट ऊंची। सीसीएसयू कैंपस में हाईमास्ट लाइट लगाने का काम शुरू भी हो गया है। पीएम ऊषा के तहत ये लाइट लगेंगी।

विश्वविद्यालय के अनुसार सर छोटूराम इंजीनियरिंग कॉलेज गेट के पास, विवि के मुख्य द्वार के अंदर और स्पोर्ट्स स्टेडियम में 80–80 फुट की तीन हाईमास्ट लाइट लगेंगी जबकि अटल सभागार, व्हाइट

बिल्डिंग पार्क, दुर्गाभाभी गर्ल्स हॉस्टल, एमपी हॉस्टल, रानी लक्ष्मी बाई हॉस्टल में 40–40 फुट ऊंची लाइट लगेंगी।

जल बचाने का संदेश

कैंपस हर साल छह वर्षा जल संचय इकाइयों से छह लाख लीटर वर्षा जल बचाएगा। अटल सभागार, शहीद कर्नल एचके शेहरावत गेस्ट हाउस, स्वामी कल्याण देव चिकित्सालय में 4276, मुख्य प्रशासनिक भवन, डॉ. एपीजे कलाम हॉस्टल की छह यूनिट से 8368 वर्गमीटर बारिश का पानी जमीन में पहुंचेगा। विवि ने मंदिर के पास बनी जल संचय इकाई को तैयार करते हुए इस पर जल बचाने का संदेश भी अंकित किया है।

सर्वाइकल कैंसर से बचाव के लिए चलाए गए टीकाकरण अभियान के दौरान बालिका को टीका लगातीं चिकित्सक। इस दौरान कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला और विश्वविद्यालय के अधिकारी एवं वरिष्ठ शिक्षक भी उपस्थित रहे।

सर्वाइकल कैंसर से बचाव के लिए टीकाकरण अभियान

परिसर संवाददाता

मेरठ। सीसीएसयू में कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला के नेतृत्व में परिसर स्थित स्वामी कल्याण देव चिकित्सालय में 13 से 25 मार्च तक सर्वाइकल कैंसर टीकाकरण अभियान चलाया गया। इसका उद्देश्य सामाजिक उत्तरदायित्व और महिला स्वास्थ्य जागरूकता को बढ़ावा देने का था। इस दौरान बालिकाओं को सर्वाइकल कैंसर से बचाव के लिए टीके लगाए गए।

इसमें स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (एसबीआई) ने 200 वैक्सीन डोज उपलब्ध कराई। कुलपति प्रो. संगीता शुक्ला ने कहा कि सर्वाइकल कैंसर गंभीर बीमारी है, लेकिन यह रोकी जा सकती है। समय पर जांच न होने और वैक्सीनेशन से दूर रहने के कारण समस्या बढ़ जाती है। उचित समय पर वैक्सीन से काफी हद तक सुरक्षा मिल सकती है।

एसबीआई के डीजीएम प्रशांत कुमार बरियार ने बताया कि सर्वाइकल कैंसर के खिलाफ जागरूकता और टीकाकरण जरूरी है। इस पहल से छात्राओं में जागरूकता बढ़ेगी।

चिकित्सक डॉ. प्रमोद कुमार बंसल ने बताया कि अब तक 400 से अधिक बालिकाओं को पहली और दूसरी डोज लगाई जा चुकी है।

वंचितों के उत्थान को समर्पित रहा कांशीराम का जीवन

परिसर संवाददाता

मेरठ। कांशीराम शोध पीठ की ओर से कांशीराम के जन्मदिवस पर 'कांशीराम जी एवं महिला सशक्तीकरण' विषय पर राष्ट्रीय विचार गोष्ठी आयोजित की गई। गोष्ठी में मान्यवर कांशीराम शोध पीठ के निदेशक प्रो. दिनेश कुमार ने कहा कि कांशीराम जी का संपूर्ण जीवन सामाजिक न्याय, समान अवसर और वंचित वर्गों के उत्थान के लिए समर्पित रहा।

प्रो. अल्पना अग्रवाल ने कहा कि कांशीराम ने महिलाओं की भागीदारी को सामाजिक परिवर्तन का मूल आधार माना था। प्रोफेसर अनीता राठी, प्रो. सतीश प्रकाश, डा. चरण सिंह लिसाड़ी व प्रो. ममता सिंह ने भी विचार रखे। इस दौरान 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता का विकास मानवता के लिए सहायक होगा?' विषय पर वाद–विवाद प्रतियोगिता हुई। शगुन बलियान एवं निशा रस्तोगी की टीम पहले, सिल्की चौधरी एवं कुहू दूसरे तथा पवन कुमार एवं आकांक्षा की टीम तीसरे स्थान पर रही।

शहीद भगत सिंह की प्रतिमा पर माल्यार्पण करतीं प्रोफेसर संगीता शुक्ला।

जिम्मेदारी की भावना के साथ कर्तव्यों का निर्वहन करें

मेरठ। सीसीएसयू कैंपस में शहीद दिवस पर हुई श्रद्धांजलि सभा में कुलपति प्रो. संगीता शुक्ला ने शहीद भगत सिंह, राजगुरु एवं सुखदेव की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया।

कुलपति प्रो. संगीता शुक्ला ने कहा कि जिम्मेदारी की भावना के साथ कर्तव्यों का निर्वहन करें। रजिस्ट्रार डॉ. अनिल कुमार यादव, प्रो. मृदुल गुप्ता, प्रो. बीरपाल सिंह, प्रो. राकेश शर्मा, प्रो. नीलू जैन गुप्ता, प्रो. कृष्णकांत शर्मा, प्रो. विग्नेश त्यागी, डॉ. विवेक कुमार सहित सभी शिक्षक मौजूद रहे।

इस सत्र से बीए, बीएससी और बीकाम में एआई की पढ़ाई अनिवार्य

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का 75 घंटे का थ्योरी–प्रैक्टिकल का बेसिक कोर्स पढ़ेंगे छात्र, मिलेंगे तीन क्रेडिट

परिसर संवाददाता

मेरठ। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) की बढ़ती उपयोगिता और मांग को देखते हुए, उच्च शिक्षा में इसे पढ़ाने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। इस संदर्भ में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने सभी विश्वविद्यालयों को 'एआई फार आल' की अवधारणा लागू करने के निर्देश दिए थे। प्रदेश में सबसे पहले कानपुर विश्वविद्यालय ने इसे लागू किया है। अब चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय (सीसीएसयू) भी एआई को अनिवार्य विषय के रूप में शामिल कर रहा है। इस सत्र से बीए, बीएससी और बीकाम पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेने वाले सभी विद्यार्थियों को अनिवार्य रूप से एआई

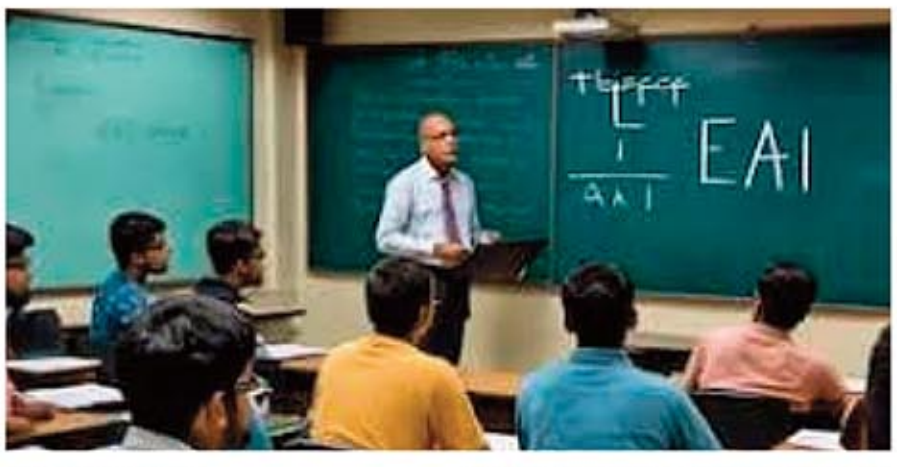

कोर्स पढ़ना होगा।

विश्वविद्यालय के कुलसचिव के अनुसार, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का यह कोर्स तीन क्रेडिट का होगा। यह 75 घंटे का थ्योरी और प्रैक्टिकल का बेसिक एआई कोर्स होगा। इसे स्नातक स्तर पर परिसर और संबद्ध कालेजों के विद्यार्थियों को दूसरे सेमेस्टर में पढ़ना होगा। कोर्स आनलाइन होगा। थ्योरी व प्रैक्टिकल दोनों आनलाइन पढ़ाए जाएंगे। चयनित कंपनी की ओर से इसका आनलाइन कंटीनुअस इंटरनल इवैल्यूएशन 40 अंकों में से किया जाएगा।

कोर्स शुरू होने पर कंपनी विश्वविद्यालय को बहुविकल्पीय प्रश्न बैंक उपलब्ध कराएगी, जिससे विश्वविद्यालय प्रश्नपत्र बनाकर 60 अंक की परीक्षा आयोजित करेगा। कुल 100 अंकों के इस कोर्स में विश्वविद्यालय के स्नातक स्तर पर निर्धारित नियमों के अनुसार ग्रेड दिए जाएंगे।

इस पहल का उद्देश्य सभी संकायों के विद्यार्थियों को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की बुनियादी समझ, व्यावहारिक उपयोग और नैतिक पक्ष से परिचित कराना है। यूजी एनईपी के बाद इसे यूजी और पीजी के सभी विषयों में लागू किया जाएगा। यह विषय केवल तकनीकी या इंजीनियरिंग छात्रों तक सीमित नहीं होगा, बल्कि कला, वाणिज्य, विज्ञान, शिक्षा, सामाजिक विज्ञान प्रबंधन सहित सभी संकायों के छात्र इसका अध्ययन कर सकेंगे।

विश्वविद्यालय के अनुसार 'एआई फार आल' को पठन–पाठन में शामिल करने से सभी विषयों के छात्रों में डिजिटल और एआइ साक्षरता, रोजगारोन्मुखी कौशल व भविष्य की तकनीकों की तैयारी कराने, नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारी की समझ बढ़ाने, शोध, नवाचार और स्टार्टअप संस्कृति को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी।

स्टार्टअप बनाने की प्रेरणा दी : सर छोटू राम इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी में इनोवेशन, उद्यमिता एवं स्टार्टअप जागरूकता कार्यक्रम में मुख्य वक्ता डॉ. शैलेंद्र जायसवाल ने छात्रों को रोजगार सृजक बनने के लिए प्रेरित किया और स्टार्टअप बनाने की प्रेरणा दी।

शोध तभी सार्थक, जब वह समाज हित में उपयोगी हो

नेताजी सुभाष चंद्र बोस प्रेक्षागृह में बौद्धिक संपदा अधिकार जागरूकता सेमिनार एवं प्रतियोगिता का आयोजन

परिसर संवाददाता

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के नेताजी सुभाष चंद्र बोस प्रेक्षागृह में दो दिवसीय बौद्धिक संपदा अधिकार (आइपीआर) जागरूकता सेमिनार एवं प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। मुख्य अतिथि एवं बागपत सांसद डा. राजकुमार सांगवान ने कहा कि शोध तभी सार्थक है, जब उसका संरक्षण सुनिश्चित हो और वह समाज के हित में उपयोगी सिद्ध हो। कुलपति प्रो. संगीता शुक्ला ने कहा कि विश्वविद्यालय नवाचार, शोध और सामाजिक उत्तरदायित्व के समन्वय के लिए प्रतिबद्ध है।

मुख्य वक्ता वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद–राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली की वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डा. कनिका मलिक ने 'कापीराइट का न्यायसंगत उपयोग बनाम साहित्यिक चोरी तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता और बौद्धिक संपदा अधिकार' विषय पर चर्चा की। डॉ. कनिका मलिक ने कहा कि डिजिटल दौर में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के बढ़ते असर के साथ कॉपीराइट एवं प्लेगरिज्म के प्रश्न और अधिक जटिल हो गए हैं। शोध और लेखन में नैतिकता का पालन बेहद जरूरी है और न्यायसंगत उपयोग की सीमाओं को समझना प्रत्येक शोधार्थी के लिए अनिवार्य है।

कार्यक्रम के दौरान कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला, सांसद राजकुमार सांगवान और विश्वविद्यालय के अन्य पदाधिकारी व शिक्षक।

डा. राम मनोहर लोहिया राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय लखनऊ के एसोसिएट प्रोफेसर (विधि) डा. विकास भाटी ने 'बौद्धिक संपदा वाद–विवाद और प्रवर्तन रणनीतियाँ' विषय पर चर्चा की। कहा कि किसी भी पेटेंट, ट्रेडमार्क या कॉपीराइट का वास्तविक महत्व तभी है, जब उसके प्रवर्तन की प्रभावी व्यवस्था हो।

डा. राम मनोहर लोहिया राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय लखनऊ के एसोसिएट प्रोफेसर डा. अमन दीप सिंह ने भी विचार रखे। संयोजक प्रो. शैलेंद्र सिंह गौरव ने कहा कि विवि नवाचार की सुदृढ़ संस्कृति विकसित करने और इसके संरक्षण के लिए प्रयासरत है।

सेमिनार में डॉ. रवि प्रकाश, डॉ. योगेंद्र प्रताप, डॉ. नाजिया, तरुण, डॉ. मोनिका, डॉ. नेहा, डॉ. शिवानी ढाका, डॉ. पूर्णिमा, डॉ. दीपांजलि, डॉ. लक्ष्मण नागर, डॉ. ज्ञानिका शुक्ला, नेहा चौधरी, डॉ. कृष्ण मुरारी अग्निहोत्री, विजय धामा, युवराज अनिल शुमम मौजूद रहे।

संत साहित्य की प्रासंगिकता पर जोर

मेरठ। हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग में संत काव्य परंपरा और हिंदी साहित्य विषय पर सेमिनार आयोजित किया गया। कुलपति प्रो. संगीता शुक्ला ने कहा कि हिंदी भाषा और भारतीय ज्ञान परंपरा को आगे बढ़ाने में इस प्रकार के शैक्षणिक कार्यक्रम महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मुख्य वक्ता उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी के कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी रहे। बीज वक्तव्य में प्रो. बजरंग बिहारी तिवारी ने भक्ति काल के संत कवियों के विचारों को आधुनिक संदर्भों से जोड़ते हुए उनके सुधारवादी दृष्टिकोण पर चर्चा की।

छात्रों को समाज की वास्तविकता से परिचित कराना भी हो शिक्षा का हिस्सा

परिसर संवाददाता

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में 'उच्च शिक्षा की पुनर्कल्पना : गुणवत्ता, समानता और वैश्विक उत्कृष्टता के लिए बहुविषयक दृष्टिकोण' विषय पर मंथन हुआ। सम्मेलन के मुख्य वक्ता एनआरसी एनसीटीई दिल्ली के अध्यक्ष प्रोफेसर एचसीएस राठौर ने कहा, उच्च शिक्षा केवल विस्तार का माध्यम नहीं, बल्कि यह उत्कृष्टता और ज्ञान की खोज का केंद्र है।

विशिष्ट अतिथि एनसीटीई और एनसीईआरटी के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर जेएस राजपूत ने शिक्षा, विज्ञान और तकनीक के समन्वित विकास को राष्ट्र निर्माण का आधार बताया। प्रो. राजपूत ने शिक्षा व्यवस्था में पारदर्शिता और भ्रष्टाचार मुक्त वातावरण की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि विद्यार्थियों को समाज की वास्तविकताओं से परिचित कराना भी शिक्षा का हिस्सा होना चाहिए।

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में उच्च शिक्षा की पुनर्कल्पना पर हुआ मंथन

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी के कुलपति प्रो. एनसी लोहानी ने सकल नामांकन अनुपात बढ़ाने, बहुभाषिकता और ओपन एजुकेशनल रिसोर्सेज को प्रोत्साहन देने की आवश्यकता बताई। स्लोवाकिया स्थित कान्स्टेंटाइन द फिलासफर विश्वविद्यालय की प्रो. अलेना हास्कोवा ने आनलाइन संबोधन में समावेशी और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के वैश्विक आयामों पर विचार व्यक्त किए। कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला ने कहा कि उच्च शिक्षा को समावेशी, शोध आधारित और बहुविषयक बनाकर वैश्विक उत्कृष्टता प्राप्त की जा सकती है।

छात्र–छात्राओं ने पोर्ट्रेट बनाना सीखा

मेरठ। सीसीएसयू कैंपस के ललित कला संस्थान में लाइफ पोर्ट्रेट डेमोंस्ट्रेशन हुआ। कुरुक्षेत्र विवि के चर्चित चित्रकार डॉ. आरके सिंह ने अपने अनुभव साझा करते हुए कला कौशल के जरिए विद्यार्थियों को लाइव पोर्ट्रेट बनाने की प्रक्रिया समझाई।

डॉ. सिंह ने विद्यार्थियों को लाइफ पोर्ट्रेट की मूलभूत तकनीक, अनुपात, प्रकाश–छाया, चेहरे की संरचना एवं अभिव्यक्ति को चित्र में प्रस्तुत करना सिखाया।

संयोजिका प्रो. अलका तिवारी ने छात्रों से प्रशिक्षण के विभिन्न पहलुओं को सीखकर लागू करने की अपील की।

भारतीय भाषाओं की एकात्मता और विविधता पर हुआ मंथन

राजनीति विज्ञान विभाग में 'भारतीय भाषा परिवार : एकत्व और एकात्मता' पर राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन

परिसर संवाददाता

मेरठ। भाषा, विचार एवं संस्कृति को व्यक्त करने का सशक्त माध्यम है और भाषायी संदर्भ विनिमय और आजीविका से नहीं है बल्कि यह स्वाभिमान का विषय है। हमें अपनी भाषा और संस्कृति पर गर्व होना चाहिए। भाषा हमारी पहचान है। राजनीति विज्ञान विभाग में 'भारतीय भाषा परिवार : एकत्व और एकात्मता' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन के शुभारंभ में यह बात अध्यक्ष भारतीय राजनीति विज्ञान परिषद प्रो. राका आर्या ने कही।

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विवि कैथल के कुलपति प्रो. राजेंद्र कुमार अनायथ ने सुनने, देखने एवं चिंतन करने की क्षमताओं को विकसित करने पर जोर दिया। प्रो. राजेंद्र ने कहा कि जीवन में गुरु अद्वितीय है।

नेपाल से आए डॉ. दीपक अधिकारी ने भारत में त्रिभाषाई सुधार को जरुरी बताते हुए कहा कि प्रत्येक प्रदेश में अंग्रेजी के स्थान पर एक प्रादेशिक भाषा, हिंदी भाषा एवं संस्कृत भाषा का उपयोग राजकीय विभागों में नियत होना चाहिए। गुजरात विवि अहमदाबाद की कुलपति प्रो. नीरजा गुप्ता ने कहा कि अनेक भाषाई शब्दों में विरोधाभास हो सकता है, परंतु भारतीय कथा एवं लोकाचार में एक साम्य विद्यमान है। डीन मानविकी प्रो. संजीव कुमार शर्मा, प्रो. जगमीत बावा, प्रो. जितेंद्र साहू, आदि मौजूद रहे।

आयोजन के दूसरे दिन प्रथम सत्र में आशीष कुमार, शगुन बालियान, रुपेश कुमार यादव, प्रो. हरेंद्र सिंह, डॉ. देवानंद सिंह, भविष्य और गणेश कुमार ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए।

डॉ. अंजू ने अपने उद्बोधन में कहा कि भाषा किसी प्रकार का गतिरोध नहीं पैदा करती, अपितु यह मानव की सामाजिकता का सबसे महत्वपूर्ण उत्पाद है। प्रो. वाचस्पति मिश्रा ने भारतीय भाषाओं की सनातनता पर प्रकाश डाला।

डॉ. राजेश कुमार (एनसीईआरटी) ने विलुप्त होती स्थानीय, क्षेत्रीय और जनजातीय भाषाओं के संरक्षण की आवश्यकता पर बल दिया। डॉ. नरेंद्र कुमार ने मातृभाषा को पहचान का आधार बताया।

प्रो. जितेंद्र साहू ने कहा कि जिसे अपनी मातृभाषा से प्रेम नहीं, उसे अपनी माटी से भी प्रेम नहीं हो सकता। प्रो. वंदना शर्मा ने काव्य पाठ से साहित्य की सृजनात्मकता को रेखांकित किया। प्रो. मनोज दीक्षित ने भारत को भाषाओं का सबसे बड़ा गुलदस्ता बताया।

प्रो. राका आर्या ने शोध में पूर्वाग्रह मुक्ति और डिजिटल माध्यमों के सही उपयोग पर जोर दिया। सम्मेलन ने भारतीय भाषाओं के संरक्षण, मातृभाषा शिक्षा के महत्व और डिजिटल युग में उनकी प्रासंगिकता पर गहन संवाद स्थापित किया।

भारतीय भाषा परिवार पर आयोजित सेमिनार में मंचासीन अतिथिगण।